International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(3): 13-15

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(3): 13-15
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2021
Accepted: 13-04-2021

गढ़वी आनंद महेशभाई
स्वस्तिक सोसायटी, पालियाद रोड़, बोटाद, तहसील एवं जिला:- बोटाद, गुजरात, भारत

Corresponding Author:
गढ़वी आनंद महेशभाई
स्वस्तिक सोसायटी, पालियाद रोड़, बोटाद, तहसील एवं जिला:- बोटाद, गुजरात, भारत

"वाणी भूषण" ग्रंथ के आधार पर लौकिक भाषा के मात्रिक छंदों का संस्कृत में प्रयोजन: प्राथमिक समालोचन।

गढ़वी आनंद महेशभाई

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा का छंदशास्त्र अति सुदिर्घ एवम् विस्तृत है। इसमें संशोधन की कई सारी नई क्षितिजे अध्येता या संशोधक को दिखती है। वैदिक छंद एवम् लौकिक छंद दोनों की धारा ने संस्कृत छंदशास्त्र को प्रभावित किया है। इसी लोकधारा की यमुना जब संस्कृत शिष्ट धारा की गंगा से मिलती है तब ये संगम अत्यंत मनोहर होता है। इस संशोधन पत्रमे हम लौकिक छंदों का संस्कृत में "वाणी भूषण" ग्रंथ के आधार पर प्रयोजन देखते है। शिष्ट का लोक पर प्रभाव हमने कई अपभ्रंश भाषा साहित्य में देखा है परन्तु आज लोक साहित्य धारा का शिष्ट पर प्रभाव देखते है।

लक्ष्मण भट्ट ने "प्राकृत पैंगलम" ग्रंथ में "सोरठा" नामक अपभ्रंश छंद का उदाहरण दिया है। [१]

"सो माणीअ पुण वंत, जासु भत्त पंडिअ तणअ ।
जासु धरिणि गुणवंति, सो वि पुहवि सग्गह णिलअ ।।"

पिङ्गलकार के अनुसार ५२ मात्रायुक्त यह छन्द बनता है। [२] दामोदर मिश्र कृत "वाणी भूषण" में इस छंद का संस्कृत उदाहरण देखते है। [३]

"अभिनव जलधर नील, अमल कमल दल लोचनम्।
सखि पश्यामि कदापि, मधुमथनं भवमोचनम् ।।"

इस तरह से सोरठा नामक अपभ्रंश मात्रिक छंद का प्रयोजन संस्कृत में हमारे समक्ष प्रस्तुत है। अब हम " दोहा " नामक अपभ्रंश छंद का विधान देखते है। प्रखर छंदशास्त्री गंगादासजी ने कहां है कि, [४]

"मात्रा त्रयोदशकं यदि, पूर्व लघुक्किरामि ।
पश्चादेकादशकन्तु, दोहिडका द्विगुणेन।। "

उक्त व्याख्यानुसार १३+११+१३+११= ४८ मात्रायुक्त " दोहड़िका " या " दोहा" छंद का निर्माण होता है। लक्ष्मण भट्टजी ने दोहा का प्राकृत उदाहरण दिया है। ५

"सुरअरु सुरही परसमणि, णहि वीरेश समाण ।
ओ वक्कल औ कठिणतणु, ओ पसु औ पासाण ।। "

दामोदरजी मिश्र ने दोहा नामक ये मात्रा वृत्त को संस्कृत में इस प्रकार से उतारा है। ६

"चरणसरोरुहमस्तु हृदि, मे वदने तव नाम ।
चक्षुषि रूपं यावदसु, रमय मनो मम राम ।।"

लक्ष्मण भट्ट ने अपभ्रंश छंद " त्रिभंगी " मात्रा वृत्त को प्राकृत में इस प्रकार से वर्णित किया है। ७

"सिर किज्जिअ गङ्गं गोरी अधङ्गं हणिअअणंगं पुरदहणं,
किअ फणिवहहारं, तिहु अणसारं, वंदिअछारं, रिउमहणं।
सुरसेविअचरणं मुणिगणसरणं भवभअहरणं सूलधरं,
साणंदिअ वअणं सुंदरणअणं गिरिवरसअणं णमण हरं ।।

इस तरह ३२ मात्राओं युक्त चार चरण ३२+३२+३२+३२= १२८ मात्राओं युक्त "त्रिभंगी" नामक मात्रा वृत्तका निर्माण करता है। दामोदर मिश्रजी ने कुछ इस प्रकार " त्रिभंगी " वृत्त को संस्कृत भाषा में आकार दिया है। ८

"विविधायुधमण्डित संगरपण्डित रणदण्डितपाखण्डभटे,
चण्डासुरखण्डिनि पुरहरमण्डिनि शशधरखण्डिनिबद्धजटे।
भवसागरतारिणि दुर्गतिहारिणि मंगलकारिणि मयि सुचिरं,
गिरिराजसुवासिनि शैलनिवासिनि शंभुविलासिनी देहि वरम्।।"

इस प्रकार से मात्रा वृत्त का यह छंद निर्माण होता है। लक्ष्मण भट्टजी ने " मधुभार " नामक लौकिक वृत्त का प्राकृत भाषा में उदाहरण निमनोक्त प्रकार से दिया है। ९

"जसु चंद सीस, पिंघणह दीस ।
सो संभु एउ, तुह सुब्भ देउ ।।"

इस प्रकार चार चरणों में ८+८+८+८= ३२ मात्राओं युक्त यह " मधुभार " वृत्त निर्माण होता है।
दामोदर मिश्रजी ने संस्कृत में यह मात्रा वृत्त निर्मित करते हुए लिखा है कि, १०

"अपि मुच्च मान, मवटो बधान ।
भुजपाशकेन, भयनाशकेन ।।"

इस प्रकार से " मधुभार " छंद का संस्कृत वृत्त परिवेश निर्माण होता है। लक्ष्मण जी भट्ट महोदय ने " हांकलि" नामक अपभ्रंश मात्रा वृत्त का उदाहरण दिया है। ११

"उच्चउ छाअण विमल धरा, तरुणी धरिणी विणअपरा ।
वित्तक पूरल मुद्दहरा, वरिसा समआ सुक्खकरा ।। "

इस प्रकार चार चरण में १४+१४+१४+१४ = ५६ मात्राओं युक्त " हांकलि " वृत्त निर्माण हुआ है। दामोदर मिश्रजी ने " हांकलि " अपभ्रंश वृत्त को संस्कृत रूप इस प्रकार से दिया है।१२

"कौमुद कुमुद बंधु वदना, स्मित पीयूष जनित मदना ।
चपल विलोचन जित हरिणी, हरति न कस्य मनस्तरुणी? ।।"

इस प्रकार "हांकलि" मात्रा वृत्त का निर्माण संस्कृत परिवेश में मनोरम्य तरीके से हुआ है।
लक्ष्मण भट्टजी ने "चुलिआला" नामक अपभ्रंश मात्रा वृत्त का उदाहरण कुछ इस प्रकार से दिया है। १३

"राआ लुध्ध समाज खल, बहु कलहारिणि सेवक धुत्तउ ।
जीवण चाहसि मुक्ख जइ, परिहरु घर जइ बहुगुणजुत्तउ ।।"

उपरोक्त प्रकार से चार चरणों में १४ गुणा चार रखके ५६ मात्रा युक्त इस मात्रा वृत्त का निर्माण किया गया है। दामोदरजी मिश्र ने इस अपभ्रंश वृत्त का सुन्दर संस्कृत परिवेश कुछ इस प्रकार से भावक गण के समक्ष रखा है। १४

"स्मितपटुकपट विलोकिते, अपहृतमानस पङ्कजलोचन।
दृष्टिपथे भवितासि मम, गोपवधूजनशोकविमोचन ।।"

इस प्रकार से " चुलिआला " नामक मात्रिक छंद का प्रयोजन संस्कृत भाषा के अंतर्गत हुआ है।

अत: हम ये बाबत अनूठे ढंग से देख सकते है कि संस्कृत भाषा साहित्य के छंदों में इस प्रकार का परस्पर मात्रिक छंदों के परिवेश का प्रयोजन सहजता से हुआ है। लौकिक से श्लोकिक ये अपूर्व यात्रा के पदचिह्न अवश्य हि अनेकानेक भावि संशोधक वर्ग के लिए ज्ञान मार्ग प्रशस्त करेंगे। इस प्रकार से मैंने अपभ्रंश एवं संस्कृत भाषा के मध्य तुलनात्मक तरीके से इन मात्रा वृत्तो को रखा है, जिसकी परिपाटी पर संशोधकिय संभावना का सूर्योदय मुझे स्पष्ट रूप से उदित होता प्रतित हो रहा है।

संदर्भ सूचि:-

1. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १७१ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
2. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १७० संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
3. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- ९६, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.
4. "छंदों मंजरी" गंगादास कृत, षष्ठः स्तबक, श्लोक क्रमांक:- ३१.
5. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- ७९ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
6. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- ५६, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.
7. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १६५ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
8. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- ११८, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.
9. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १७८ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
10. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- १००, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.
11. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १७४ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
12. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- ९८, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.
13. "प्राकृत पैंगलम्" भाग -१ छंद क्रमांक:- १६९ संपादक:- डॉ. भोला शंकर व्यास। (Prakrit text society, Varanasi- edited in 1959)
14. "वाणी भूषण" दामोदर मिश्र कृत, प्रथम परिच्छेद श्लोक क्रमांक:- ९४, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- M N 000667.